बिमला को मिला सम्मान और समाधान

संदर्भः— मकोनी ग्राम राजापुर पंचायत के अंतर्गत आने वाला गॉव है जो जिला मुख्यालय से 8 किलो मीटर की दूरी पर पूर्व दिषा की ओर उनाव रोड खेरी मंदिर से तीन किलोमीटर उत्तर दिशा की और स्थित है गॉव मे कुल 116 परिवार निवास करते हैं। गॉव की कुल जनसंख्या 734 हैं जिसमें मूल रूप से 105 परिवार दलित, 7 परिवार यादव, 4 परिवार तोमर समाज के लोग निवास करते हैं यहॉ का मुख्य व्यवसाय खेती एवं मजदूरी है। गांव मे जल स्रोत के नाम पर 6 हेण्ड पंप जिसमे 4 चालू है और 2 बंद हैं। गॉव मे प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूल और एक ऑगनवाड़ी संचालित हैं ।गॉव में षौच के लिए गॉव के आस पास ही जाते है रास्ते के दोनों साइड गंदगी पडी है गॉव मे घरेलू स्तर पर 'षौचालय न होने से सबसे ज्यादा महिलाओं एवं वृद्ध लोगों को परेषानी होती है।

हस्तक्षेपः— परहित समाज सेवी संस्था द्वारा समग्र स्वच्छता अभियान के तहत जून 2014 से दतिया जिला के दतिया व्लॉक के 40 पंचायत के 84 गॉवो मे लोगो को स्वच्छता के महत्व के प्रति जागरूक करने एवं स्वच्छता की आदतो को अपनाने हेतु जागरूकता का काम षुरू किया गया । इसी दौरान संस्था के कार्यकर्ताओं द्वारा मकोनी गांव में समुदाय के साथ बैठक हेतु योजना बनाई गई एवं साथ ही राजापुर पंचायत के सचिव एवं सरपंच से भी इस संबंध में चर्चा की गई राजापुर पंचायत के सरपंच के द्वारा इस हेतु पूरा सहयेाग करने का आष्वासन दिया गया ।

पहला चरणः— 6 जून 2014 में निर्मल भारत अभियान से जयंती जी के द्वारा भी इस गांव का भ्रमण किया गया एवं समुदाय के साथ एक बड़े स्तर की बैठक कर सभी को स्वच्छता के संदेषों के साथ साथ शौचालय निर्माण की प्रक्रिया एवं इसके लाभ के बारे में चर्चा की गई ।इस बैठक का काफी सकारात्मक प्रभाव रहा । कार्य को गति देने के लिए इसी क्रम में परहित समाज सेवी संस्था के द्वारा 23 जून 2014 को मकोनी गॉव में समुदाय के साथ बैठक का आयोजन किया गया इस बैठक में संस्था के कार्यकर्ता दीपक एवं अनुराग ने मकोनी गांव में शौचालय न बनाने के कारणों को जानने का प्रयास किया और अन्ततः शौचालय न बनाने

का मुख्य कारण जानकारी का अभाव एवं इसके फायदों को न समझ पाना था । संस्था कार्यकर्ता इन सब कारणों एवं समाधान पर चर्चा ही कर रहे थे इसी दौरान वहां से बिमला एवं उसकी बूढी मां का आना हुआ वह अपनी बूढी मॉ को गॉव से वाहर सेष्षौच कराके वापिस आ रही थी बेठक कर रहे संस्था कार्यकर्ताओं का ध्यान बिमला एवं उसकी बूढी मां पर गया, बिमला की मां की उम्र 92 बर्ष है एवं इन्हें अब कुछ दिखाई भी नहीं देता हैं इसलिए बिमला अपनी मां का लोटा लिए थी एवं साथ ही उनको चलने के लिए सहारा दे रही थी, बैठक के बाद अनुराग एवं दीपक बिमला के घर गए और पहले उसके और परिवार के वारे मे जानकारी ली गई। जिसमे उन्होने वताया कि परिवार मे 3 पुरूष एवं 4 महिला 1 वालक 2 वालिका रहती है। कमला के परिवार का मुख्य व्यवसाय खेती और मजदूरी है कमला का मायका ग्राम तिगरा मे है वहॉ कमला के पिताजी का स्वर्गवास हो गया और उनकी माता जी अकेली थी इसलिए कमला अपनी माता जी पानों वाई को अपने साथ मकोनी अपनी ससुराल मे ले आई थी। कमला की 82 साल की माता जी पिछले 6 साल से कमला के साथ ही रहती हैं ।

दूसरा चरण :–संस्था कार्यकर्ता द्वारा कमला से पूछा गया कि खुले मे शौच जाने से आपकी माता जी जो बूढी है उन्हें परेशानी नही होती । जव आप खेत पर काम के लिए जाएगी तव माता जी को शौच के लिए कोन ले जाएगा अगर माता जी ने घर पर शौच कर लिया तो कोन साफ करेगा आपकी तो माता है लेकिन क्या आपकी बहुऍ उनका मल साफ करेगी तव कमला ने वताया कि कोई किसी की सेवा नही करता और अगर रात को मॉ का पेट खराव हो जाता है तो हम ही परेशान होते हैं । और कई बार तो दिन में 4–4 बार शौच के लिए ले जाना होता है तब हम बहुत परेशान हो जाते हैं ।

तीसरा चरणः– कमला ने वताया कि परेशानी तो वहुऔं को भी होती है ‘शौच जाने के लिए रात हाने का इंतजार करना पडता है। अभी मेरी एक बहू गर्भवती भी हैं डर लगा रहता हैं कि

रात के अंधेरे में कहीं पैर न फिसल जाए और शौच के लिए बाहर जाने में वाहर जाते वक्त सॉप विच्छू का डर लगता है और इज्जत का भी।

चौथा चरणः—संस्था कार्यकार्ता द्वारा खुले मे शौच से होने वाली परेशानी के वारे वताया एवं शौचालय के महात्व को वताया कि घर मे 'शौचालय होने से रात मे जा सकते हैं जिससे सांप विच्छू का खतरा नही रहता एवं महिलाओं की मर्यादा को ठेस नहीं पहुचती एवं समय वचता है। जिसे हम अपने घर के काम मे लगा सकते है। और साथ ही 'शौचालय वनाने के लिए 'शासन से आपको प्रोत्साहन राशी भी मिलेगी ।

निष्कर्षः—काफी समझाने पर कमला को समझ में आ गया और उन्होंने प्रण लिया कि अब वे अपना शौचालय बनाकर तैयार कर लेगी। और कमला ने अपना शौचालय बनाने के लिए अपने बडे बेटे से कहकर पास के नाले से रेत मंगाई लगभग 12 दिन में शौचालय बनाने के लायक रेत जुटा ली गई एवं अन्य सामान बिमला को पंचायत सचिव के द्वारा निर्मल भारत अभियान की ओर से प्रोत्साहन के रूप में दे दिया गया और बिमला के पूरे परिवार के सहयोग से शौचालय बना लिया गया।

आज बिमला और बिमला की मॉ बहुत खुश हैं क्योंकि उन्हें शौच के लिए घर से वाहर नहीं जाना पडता बिमला भी अव खेती के काम में अपना सहयोग देती हैं। मॉ को शौच के लिए ले जाने की समस्या दूर हो गई है। बिमला की बहुएं भी वहुत खुश हैं उन्हें भी अव 'शौच जाने के लिए अंधेरा होने का इंतजार नहीं करना पड़ता।

****